



भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण
EXTRAORDINARY

भाग I—खण्ड I
PART I—Section I

प्राधिकार से प्रकाशित
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 6]
No. 6]

नई दिल्ली, मंगलवार, जनवरी 2, 2001/पौष 12, 1922
NEW DELHI, TUESDAY, JANUARY 2, 2001/PAUSA 12, 1922

वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय

(वाणिज्य विभाग)

(पाटनरोधी एवं संबद्ध शुल्क महानिदेशालय)

अधिसूचना

नई दिल्ली, 2 जनवरी, 2001

प्रारंभिक निष्कर्ष

विषय :—यूरोपीय संघ के मूल के अथवा वहां से निर्यातित सोडियम फेरा साइनाइड के आयातों संबंधित पाटनरोधी जांच प्रारंभिक निष्कर्ष

सं. 23/1/2000-डी जी ए डी.—1995 में यथासंशोधित भारत सरकार सीमा शुल्क टैरिफ अधिनियम 1975 तथा उसकी सीमा शुल्क टैरिफ (पाटित वस्तुओं की पहचान, उन पर पाटनरोधी शुल्क का आकलन, संग्रहण तथा क्षति निर्धारण) नियमावली, 1995 को ध्यान में रखते हुए :

क. **प्रक्रिया**

2. नीचे वर्णित प्रक्रिया अपनाई गई है:-

- (i) निर्दिष्ट प्राधिकारी (जिसे इसके बाद प्राधिकारी कहा गया है) को उपरोक्त नियमों के तहत घरेलू उद्योग की ओर से मै. साइनाइड एंड कंपनी मुंबई से एक लिखित याचिका प्राप्त हुई है जिसमें यूरोपीय संघ (जिसे इसके बाद ई यू कहा गया है) के मूल के और वहां से निर्यातित सोडियम फेरो साइनाइड के पाटन का आरोप लगाया गया है,
- (ii) प्राधिकारी ने उपरोक्त नियम 5 के उपनियम (5) के अनुसार जांच की कार्रवाई शुरू करने के पूर्व याचिकाकर्ता द्वारा पाटन के संबंध में दिए गए आवेदन की प्राप्ति के बारे में भारत यूरोपीय आयोग के शिष्टमंडल को सूचना दी,
- (iii) प्राधिकारी ने सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम 1975 की अनुसूची 1 के उपशीर्ष 2837.20 के अंतर्गत वर्गीकृत ई यू मूल के सोडियम फेरो साइनाइड के आयातों के संबंध में पाटनरोधी

कार्रवाई शुरू करते हुए 13 जून, 2000 को एक सार्वजनिक सूचना जारी की जिसे भारत के राजपत्र, असाधारण में प्रकाशित किया गया,

- (iv) प्राधिकारी ने ज्ञात निर्यातकों, आयातकों, उद्योग एसोसिएशनों और शिकायतकर्ता को उक्त सार्वजनिक सूचना की प्रति भेजी और उन्हें लिखित में अपने विचारों से अवगत कराने का अवसर प्रदान किया,
- (v) उपरोक्त नियम 6 के उपनियम (3) के अनुसार प्राधिकारी ने याचिका की एक प्रति सभी ज्ञात निर्यातकों और भारत में यूरोपीय आयोग के प्रतिनिधिमंडल को उपलब्ध करवाई,
- (vi) प्राधिकारी ने संगत सूचना मांगने के लिए निम्न लिखित निर्यातकों को प्रश्नावलियां भेजी:

1. मै. मैनोक्स पिगमेंट बिजनेस, मान्चेस्टर, ग्रेट ब्रिटेन
2. मै. देवुसा-हल्स एजी, फ्रैंकफुर्ट, जर्मनी
3. मै. देवुसा हल्स लि. चेसायर एस के, ग्रेट ब्रिटेन

- (vii) नई दिल्ली में यूरोपीय आयोग के प्रतिनिधिमंडल को जांच शुरू करने के बारे में भी सूचित किया गया था और उनसे अनुरोध किया गया था कि वे निर्धारित समय के भीतर प्रश्नावली का उत्तर देने के लिए अपने क्षेत्र के निर्यातकों/उत्पादकों से कहें।

- (viii) सोडियम फेरो साइनाइड के निम्नलिखित आयातकों को प्रश्नावली भेजी गई थी :

1. मै. सिटरजिया बायो कैमिकल्स, मुंबई
2. मै. सेठ कैमिकल्स वर्क्स प्रा. लि., कलकत्ता
3. मै. शान्ति लैब्स, बीकानेर
4. मै. सोना इंटरकैम, बापी
5. मै. कैमिकल्स कारपोरेशन, मुंबई

- (ix) मै. सोना इंटरकैम, बापी द्वारा प्रश्नावली का उत्तर प्रस्तुत किया गया था जिन्होंने यह बताया है कि उन्होंने जांच अवधि के दौरान कोई आयात नहीं किया है। निर्यातकों में से मै. देवुसा हल्स एजी, जर्मनी ने प्रश्नावली का उत्तर प्रस्तुत किया है। उनके द्वारा प्रस्तुत सूचना का फ्रैंकफुर्ट जर्मनी स्थित उनके परिसरों और मान्चेस्टर, यूके में उनके कारखाने में सत्यापन किया गया था।

- (x) याचिकाकर्ताओं से क्षति के बारे में अतिरिक्त सूचना मांगी गई थी जो प्रस्तुत कर दी गई थी।

- (xi) प्राधिकारी ने अपने पास रखी गई सार्वजनिक फाइल के रूप में विभिन्न हितबद्ध पार्टियों द्वारा प्रस्तुत साक्ष्य का अगोपनीय अंश उपलब्ध रखा और उसे हितबद्ध पार्टियों द्वारा जांच हेतु खुला रखा।

- (xii) ***** यह चिन्ह हितबद्ध पार्टी द्वारा गोपनीय आधार पर प्रस्तुत सूचना प्रदर्शित करता है और प्राधिकारी द्वारा नियमों के तहत उसे ऐसा ही माना गया है।

- (xiii) प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग से सूचना मांगी और उसका सत्यापन किया और इस प्रयोजनार्थ याचिकाकर्ता के मुंबई स्थित मुख्यालय परिसरों और सूरत स्थित कारखानों में जांच की गई थी।

- (xiv) प्राधिकारी ने लागत जांच भी की और सामान्य तथा स्वीकृत लेखा सिद्धांतों के आधार पर उत्पादन की ईष्टतम लागत और भारत में सोडियम फेरो साइनाइड के निर्माण और बिक्री की लागत को निकाला।

- (xv) इस जांच में शामिल अवधि 1 जनवरी 1999 से 31 दिसम्बर 1999 तक की है।
- (xvi) जांच शुरू आत संबंधी सूचना की प्रतियां व्यापक परिचालन हेतु फिक्की, सी आर आई, ऐसोचेम इत्यादि को भी भेजी गई थी।

(ख) **याचिकाकर्ता के विचार**

3. याचिकाकर्ता ने निम्नलिखित मुख्य बिन्दुओं का उल्लेख किया है:

- (i) याचिकाकर्ता घरेलू उद्योग का प्रतिनिधित्व करता है और याचिकाकर्ता द्वारा उत्पादित किए जा रहा सोडियम फेरो साइनाइड ई यू से आयात हो रहे सोडियम फेरो साइनाइड के समान उत्पाद है।
- (ii) ई यू द्वारा भारत में सोडियम फेरो साइनाइड का पाटन किया जा रहा है और इसीलिए याचिकाकर्ता ने पाटनरोधी शुल्क की वसूली पर विचार करने हेतु निर्दिष्ट प्राधिकारी से संपर्क किया है।
- (iii) सोडियम साइनाइड सोडियम फेरो साइनाइड के उत्पादन में प्रयुक्त होने वाली एक मूलभूत कच्ची सामग्री है और अकेले सोडियम साइनाइड के मूल्य पर विचार कर इस एकमात्र कच्ची सामग्री की लागत को भी ई यू से हुए आयातों में शामिल नहीं किया जा रहा है।
- (iv) जहां तक सामान्य मूल्य का संबंध है याचिकाकर्ताओं ने ई यू में सोडियम फेरो साइनाइड की घरेलू कीमतों के बारे में सूचना प्राप्त करने के प्रयास किए। तथापि वे ई यू के विनिर्माताओं द्वारा वसूल की जाने वाली स्थानीय कीमतों अथवा अन्य देशों को हुए उद्योग निर्यातों के बारे में कोई उचित और प्रामाणिक साक्ष्य प्राप्त नहीं कर सके। अतः उन्होंने सोडियम साइनाइड, जो मूलभूत कच्ची सामग्री है की उत्पादन लागत और घरेलू मान के अनुसार उपयोगिता कीमत इत्यादि के ब्यापारों के आधार पर ई यू में सामान्य मूल्य का पारिकलन किया। सोडियम साइनाइड सोडियम फेरो साइनाइड के उत्पादन हेतु एक प्रमुख कच्ची सामग्री है और उसका सोडियम फेरो साइनाइड की कुल उत्पादन लागत में एक प्रमुख हिस्सा है।
- (v) ई यू से हुए सोडियम फेरो साइनाइड के निर्यात की सी आइ एफ कीमत गॉण स्रोतों उपलब्ध सूचना के आधार पर निकाली गई है क्योंकि वाणिज्यिक आसूचना एवं सांख्यिक महानिदेशालय, कलकत्ता जो कि भारत में इस प्रकार के आंकड़ों का संकलन करने वाला एक सरकारी एजेंसी है, ने याचिका दायर किए जाने के समय वर्ष 1999 के लिए सूचना नहीं दी है। अमरीकी डालर में प्रति इकाई आयातों का निर्धारणीय मूल्य 936.11 प्र.मी.टन बैठता है। निबल निर्यात कीमत निकालने के लिए 1 प्रतिशत की दर से उतर प्रभार, समुद्री भाड़ा, समुद्री बीमा, कमीशन, निर्यात के देश में स्वदेशी परिवहन, पत्तन हैंडलिंग और पत्तन प्रभार जैसे विभिन्न खर्चों के लिए निर्यात कीमत का समायोजन किए जाने की जरूरत है जिसकी पाटन मार्जिन निकालने के लिए सामान्य मूल्य के साथ तुलना कर होती है। घरेलू उद्योग द्वारा की गई गणना के आधार पर निबल निर्यात कीमत के प्रतिशत के रूप में पाटन मार्जिन 100 प्रतिशत से अधिक बनता है।
- (vi) ई यू सोडियम फेरो साइनाइड के आयातों में तेजी से वृद्धि हुई है जो 1998 में शून्य बढ़कर 1999 में 200 प्र.मी.टन हो गए हैं।

- (vii) वर्ष 1999 के दौरान भारत में सोडियम साइनाइड सोडियम फेरो साइनाइड का कुल आयात 298 मी.टन का हुआ था ।
- (viii) ई यू से भारत में हुए सोडियम फेरो साइनाइड के निर्यातों से घरेलू उद्योग की बिक्रियों में 1998 की तुलना में 1999 में भारी गिरावट आई है और इस प्रकार घरेलू उत्पादन और क्षमता उपयोग में कमी आई है ।
- (ix) ई यू से हुए पाटन को ध्यान में रखते हुए भारतीय बाजार में कीमत कटौती और बिक्री में कमी की स्थिति रही ।
- (x) घरेलू उद्योग को आर्थिक और वास्तविक क्षति हुई जो सीधे ही पाटित आयातों के कारण हुई है ।

(ग) आयातकों और निर्यातकों के विचार

4. आयातकों में से एक आयातक मै. सोना इंटर कैम प्रा. लि. ने अधिसूचना के उत्तर में यह बताया है कि उन्होंने पिछले चार वर्षों के दौरान इस उत्पाद की किसी मात्रा का आयात नहीं किया है और इसलिए प्रश्नावली के संबंध में कोई सूचना प्रस्तुत नहीं कर रहे हैं ।
5. मै. देबुसा हल्स, एजी जो ई यू का निर्यातक है, ने उन्हें भेजी गई प्रश्नावली का उत्तर प्रस्तुत करने के लिए समयावधि को 11.8.2000 तक बढ़ाने का अनुरोध किया जिसे निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा स्वीकार कर किया गया था और उनके कानूनी प्रतिनिधियों के जरिए 11.8.2000 को उनके द्वारा उत्तर प्रस्तुत किया गया था । बाद में अपने पूर्ववर्ती अनुरोधों में उल्लिखित कुछेक मुद्दों को स्पष्ट करते हुए 14 और 18 सितम्बर 2000 के पत्रों के तहत उन्होंने आगे और अनुरोध किए थे । निर्दिष्ट प्राधिकारी ने उनके द्वारा प्रस्तुत सूचना का फ्रैंक-फुर्त, जर्मनी में उनके पारेसर्स और मान्चेस्टर, यू के. में उनके कारखाने में सत्यापन किया गया था । निर्यातकों द्वारा अपने अनुरोधों में उठाए गए मुद्दों का संक्षेप में निम्नानुसार उल्लेख किया जाता है:
- (i) जांच अर्थात् जनवरी-दिसम्बर 1999 के दौरान भारत को सभी मात्राओं का निर्यात केवल एक ग्राहक को किया गया है । यद्यपि, छोटी-छोटी मात्राओं के अलग अलग पोतलदान किए गए हैं तथापि उनका पोतलदान भारत में ग्राहक के डिलीवरी संबंधी निर्देशों के अनुसार प्रति वर्ष ***** मी.टन की कुल आपूर्ति हेतु एकमात्र आदेश पर किया गया है ।
- (ii) भारत को की गई उपरोक्त आपूर्ति की तुलना में उन्होंने ई यू के अनेक ग्राहकों को उक्त उत्पाद की आपूर्ति की थी और इन ग्राहकों में से बहुत ही कम ग्राहकों ने आर्डर दिए थे और उन्हें ***** मी.टन से अधिक मात्रा की आपूर्ति की गई थी । अन्य ग्राहकों की जरूरतें उक्त आर्डर भारतीय ग्राहक द्वारा दिए गए आर्डर में उल्लिखित मात्रा की तुलना में अपेक्षाकृत कम थी । पाटनरोधी नियमों के अनुबंध I के पैरा 6 (i) के अनुसार निर्यात कीमत और सामान्य मूल्य के बीच उचित तुलना की जाएगी और यह तुलना व्यापार के उसी स्तर पर तथा यथा संभव उसी समय पर की गई बिक्रियों के संबंध में की जाएगी । कीमत तुलनीयता पर प्रभाव डालने वाले अंतरों के लिए उचित छूट दी जानी अपेक्षित है । ~~जिसे~~ एक कारक का विशेष तौर पर उल्लेख किया गया है वह है- मात्राओं में अंतर/ अतः अनुरोध है कि भारत को हुए निर्यातों के अनुरूप सामान्य मूल्य ई यू के उन ग्राहकों के लिए भारत औसत कीमत होना चाहिए जिन्हें ***** मी.टन से अधिक मात्रा की आपूर्ति की गई थी ।

(iii) याचिकाकर्ताओं द्वारा किए गए अनुरोधों के अनुसार, ई यू में सोडियम फ़ैरोसायनाईड के सामान्य मूल्य का आकलन सोडियम सायनाईड के सामान्य मूल्य को ध्यान में रखते हुए किया गया है, जो प्रमुख कच्ची सामग्री है, जैसाकि प्राधिकारी द्वारा ई यू से होने वाले सोडियम सायनाईड के आयात के संबंध में पहले की पाटनरोधी जांच में निर्धारित किया गया था। सोडियम सायनाईड का उत्पादन तथा इसकी बिक्री डेगुसा हुल्स के जर्मनी स्थित एक प्रभाग द्वारा की जाती है, जबकि सोडियम फ़ैरोसायनाईड का विनिर्माण मैनचेस्टर, यू के, स्थित एक अन्य प्रभाग द्वारा किया जाता है। यह प्रभाग समूह के भीतर से सोडियम सायनाईड की खरीद नहीं करता है जबकि याचिकाकर्ताओं का ऐसा मानना है। यह उनके मामले में प्रथम दृष्ट्या तर्कदोष है। सोडियम फ़ैरोसायनाईड का विनिर्माण करने वाले यूके स्थित प्रभाग द्वारा *** अमरीकी डालर प्रति मी.टन की कीमत पर सोडियम सायनाईड द्रव की आपूर्ति की जाती है और सोडियम फ़ैरोसायनाईड के एक मी.टन के विनिर्माण के लिए सोडियम सायनाईड के प्रयोग के आधार पर सोडियम फ़ैरोसायनाईड के विनिर्माण में प्रयुक्त सोडियम सायनाईड की वास्तविक लागत याचिकाकर्ता द्वारा दावा किए गए *** अमरीकी डालर प्रति मी.टन के बजाय केवल *** अमरीकी डालर प्रति मी. टन बैठती है। याचिकाकर्ता द्वारा सोडियम सायनाईड की लागत को 50 प्रतिशत से अधिक से बढ़ा कर बतलाया गया है। इसके संबंध में अपेक्षित साक्ष्य गोपनीय अंश में संलग्न किया गया है।

(iv) उपर उल्लिखित एक मात्र कारक ही प्राधिकारी को इस बात के लिए संतुष्ट करने के लिए काफी है कि उनकी उत्पादन लागत सही है तथा याचिकाकर्ता ने सोडियम फ़ैरोसायनाईड की आकलित लागत को बढ़ा चढ़ा कर दिखाते हुए पाटन को उचित ठहराया है और इसलिए प्राधिकारी से यह अनुरोध किया गया कि वे याचिका में दी गई सूचना को नजरअन्दाज कर दें तथा प्रश्नावली के जवाब में दी गई सूचना के आधार पर पाटन यदि कोई हो, का निर्धारण करें।

(V) लाभप्रदता में आई गिरावट के कारण कथित वास्तविक क्षति ई यू की वजह से नहीं हुई क्योंकि सोडियम फ़ैरोसायनाईड के निर्यात की शुरुआत केवल 1999 में ही हुई थी जबकि घरेलू उद्योग को 1997 एवं 1998 में भी हानि उठानी पड़ी थी। मै. डेगुसा हुल्स की कीमतों ने घरेलू उद्योग की कीमतों को प्रभावित नहीं किया और वस्तुतः वे इस बात को सुनिश्चित करते हैं कि उनकी कीमतें उसी स्तर की थी जिस स्तर पर घरेलू उद्योग की कीमतें थी। इसके अलावा इन कीमतों पर यदि घरेलू उत्पादक अपनी लागत को पूरा करने तथा लाभ कमाने में समर्थ नहीं थे तो इसका इल्जाम डेगुसा हुल्स पर नहीं लगाया जा सकता है। इस प्रकार याचिकाकर्ता द्वारा अपनी

लागत को पूरा करने की असमर्थता ऐतिहासिक कारकों के कारण है न कि ई यू से होने वाले निर्यात के कारण ।

घ. प्राधिकारी द्वारा जांच तथा निष्कर्ष

4. इन निष्कर्षों पर पहुंचते समय निर्यातकों, आयातकों, याचिकाकर्ता तथा अन्य हितबद्ध पार्टियों द्वारा किए गए अनुरोधों की जांच की गई है तथा उन पर विचार किया गया है और जहां कहीं उचित समझा गया, उन पर इसके बाद चर्चा की गई है ।

ङ. समान वस्तु एवं विधाराधीन उत्पाद

5. सोडियम फ़ैरोसायनाईड एक अकार्बनिक रसायन है और इसका विनिर्माण सोडियम सायनाईड से किया जाता है, जिसका उपयोग इलेक्ट्रोप्लेटिंग उद्योग में फ़ेसीसइन, पिगमेंट्स, फ़ोटोग्राफ़िक फ़िक्सिंग एजेंट के उत्पादन में फ़्लैमिंग की किण्वन प्रक्रिया में तथा भेषज/रसायन उद्योग इत्यादि में किया जाता है । सोडियम फ़ैरोसायनाईड सीमाशुल्क टैरिफ़ अधिनियम 1975 की अनुसूची I के सीमाशुल्क कोड 2837.20 के तहत वर्गीकृत है ।
6. ईयू से आयात किए जा रहे सोडियम फ़ैरोसायनाईड के लक्षण घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादन किए जा रहे सोडियम फ़ैरोसायनाईड से बिल्कुल मिलते-जुलते हैं और इसलिए इन दोनों को उपरोक्त नियम 2(घ) के अनुसार समान वस्तु माना गया है । इसलिए यह उत्पाद, सोडियम फ़ैरोसायनाईड इस जांच दायरे के अंतर्गत आता है ।

च. घरेलू उद्योग

7. यह याचिका मै. सायनाईड्स एंड कैमिकल्स कं. (हिन्दुस्तान डेवलपमेंट कारपोरेशन की एक इकाई), 65 फ्री प्रेस हाउस, नारीमन प्वाइंट, मुंबई द्वारा दायर की गई है ।

मैसर्स गुजरात अलकालीज एंड कैमिकल्स लि०, भी सोडियम फ़ैरोसाइनाइड का उत्पादन कर रहा है। तथापि, कुल भारतीय उत्पादन में याचिकाकर्ताओं के उत्पादन का हिस्सा 80 % से अधिक बनता है और इसलिए, याचिकाकर्ता को उपरोक्त नियम 2(ख) के अनुसार घरेलू उद्योग माना गया है।

(घ) पाटन

सामान्य मूल्य

8. घरेलू उद्योग ने अपने अनुरोधों में ई यू के विनिर्माताओं की घरेलू बिक्री की कीमतों का साक्ष्य से संबंधित सूचना के अभाव में परिकल्पित सामान्य मूल्य का उपयोग करने का अनुरोध किया है। तथापि, ई यू के विनिर्माताओं में से एक विनिर्माता मैसर्स डेगुसा हल्स द्वारा दिए गए जवाब को ध्यान में रखते हुए घरेलू कीमतों के संबंध में पर्याप्त सूचना प्रस्तुत कर दी गई है। प्राधिकारी की मंशा है कि सामान्य मूल्य निकालने के लिए ई यू में घरेलू बिक्री कीमत के संबंध में निर्यातक द्वारा दी गई सूचना का उपयोग किया जाए।

9. प्राधिकारी निर्यातक द्वारा दिए गए इस तर्क को स्वीकार करते हैं कि सामान्य मूल्य का गणना ई यू के उन ग्राहकों के लिए बिक्री कीमत पर आधारित होगी जिन्होंने ***** मी.टन से अधिक मात्राओं की आपूर्ति की है क्योंकि जिस आर्डर पर भारत के ग्राहक को आपूर्तियाँ की गईं वह आर्डर थी ***** मी.टन की कुल आपूर्ति के लिए था। तथापि, इस सूचना का उपयोग करते समय, प्राधिकारी ने घरेलू बिक्रियों के ऐसे सौदों की अनदेखी करने का निर्णय लिया जो उत्पादन लागत से कम पर किए गए हैं क्योंकि ये पाटनरोधी नियमों के अनुसार अनुबंध -1 के पैरा - 2 व अनुसार कीमतों की वजह से व्यापार के सामान्य व्यवहार के अंतर्गत नहीं आते हैं। प्राधिकारी का मानना है कि कुछ ग्राहकों के मामले में, आपूर्तियाँ प्रति ईकाई उत्पादन लागत से कम कीमतों पर की गई हैं। ये आपूर्तियाँ वर्ष भर भारी मात्राओं में की गई हैं और इसलिए एक उपयुक्त समयावधि के अंदर सभी लागतों की वसूली नहीं हो सकती है। सामान्य मूल्य का निर्धारण सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम की धारा 9 क(1) (ग) के अनुसार किया गया है। निर्यातकों द्वारा छूट/कमीशन के रूप में ***** % का निर्यात कीमत में समायोजन का दावा किया गया है जिसे स्वीकार कर लिया गया है और सत्यापन के पश्चात् अनुमति दी गई है।

निर्यात कीमत

10. याचिकाकर्ता ने द्वितीयक साक्ष्य के आधार पर निर्यात कीमत के संबंध में सूचना प्रस्तुत की थी और हैंडलिंग प्रभारों, समुद्री भाड़े, समुद्री बीमा, कमीशन इत्यादि के लिए समायोजनों का दावा किया था। तथापि, अपने अनुरोधों में निर्यातकों ने भारत की निर्यात कीमत के संबंध में पूर्ण सूचना दी है और निर्यात कीमत के लिए अपने दावों के समर्थन में और हैंडलिंग प्रभारों, समुद्री भाड़े, समुद्री बीमा, कमीशन इत्यादि के लिए समायोजनों के लिए बीजकों एवं अन्य दस्तावेजों को प्रस्तुत किया है। निर्यातकों द्वारा

प्रस्तुत सूचना का सत्यापन किया गया है और इसे स्वीकार किया गया है।

पाटन मार्जिन

11. सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम और पाटनरोधी नियमों में यथा निर्धारित सामान्य मूल्य, निर्यात कीमत और पाटन मार्जिन के निर्धारण को अधिशासित करने वाले सिद्धांत के नियमों के अनुबंध-1 में दिए गए हैं। सामान्य मूल्य और निर्यात कीमत के बीच उचित तुलना करने के प्रयोजनार्थ, प्राधिकारी ने उपरोक्त पैराग्राफों में उल्लिखित मापदंडों के आधार पर गणना की है। इस प्रकार निकाले गए सामान्य मूल्य और निर्यात कीमत की उचित तुलना के आधार पर डेगुसा हल्स द्वारा दिए गए निर्यातों के संबंध में पाटन मार्जिन निर्यात कीमत का 60% बनता है। प्राधिकारी की मंशा ई यू से हुए सभी निर्यातों के लिए इसी पाटन मार्जिन का उपयोग करने की है क्योंकि ई यू से इस उत्पाद का कोई अन्य विनिर्माता-निर्यातक प्रतीत नहीं होता है।

(ज) क्षति

12. उपरोक्त नियम 11 अनुबंध-11 के तहत जब क्षति के बारे में किसी निष्कर्ष पर पहुँचा जाता है तो इस प्रकार के निष्कर्ष में....."पाटित आयातों की मात्रा, घरेलू बाजार में समान वस्तुओं की कीमतों पर उनके प्रभाव तथा इस प्रकार की वस्तुओं के घरेलू उत्पादकों पर से आयातों के परिणामी प्रभाव सहित सभी संगत तथ्यों पर विचार करते हुए घरेलू उद्योग को हुई क्षति का निर्धारण शामिल होगा।" कीमतों पर पाटित आयातों के प्रभाव पर विचार करते समय यह जांच करना आवश्यक समझा जाता है कि पाटित आयातों के कारण भारत में समान वस्तुओं की कीमत की तुलना में कीमत में कोई उल्लेखनीय गिरावट आई है अथवा नहीं अथवा क्या इस प्रकार के आयातों से कीमतों में अन्यथा उल्लेखनीय स्तर तक गिरावट आई है अथवा कीमत में होने वाली ऐसी वृद्धि में रूकावट आई है जो कि अन्यथा उल्लेखनीय स्तर तक पहुँच गई होती। हो रही क्षति का निर्धारण करने के लिए घरेलू उद्योग द्वारा की गई बिक्रियों की मात्रा पर पाटित आयातों के प्रभाव की भी जाँच करना जरूरी है।

13. भारत में घरेलू उद्योग पर पड़ने वाले प्रभावों की जांच करने के लिए प्राधिकारी ने ऐसे अन्य सूचकों पर विचार किया है जिनका उद्योग की स्थिति पर प्रभाव पड़ता है जैसे कि उत्पादन, क्षमता उपयोग, बिक्री, स्टॉक, लाभप्रदता, निवल बिक्री प्राप्ति इत्यादि।

(क) पाटित आयातों की मात्रा और बाजार हिस्सा

वर्ष 1998 तक ई यू से होने वाले सोडियम फ़ैरोसाइनाइड के आयात शून्य थे जो 1999 में बढ़कर 200 मी.टन हो गए, जिससे यह पता चलता है कि लगभग 900 मी.टन के कुल बाजार आकार में आयातों में तेजी से वृद्धि हुई है। इस प्रकार, ई यू के क्षेत्रों से भारत में हुए सोडियम फ़ैरोसाइनाइड के आयातों का बाजार हिस्सा भी 0 प्रतिशत से बढ़कर 1999 में कुल घरेलू मांग का

लगभग 30 प्रतिशत हो गया है। ई यू से सोडियम फ़ैरोसाइनाइड के आयातों में समग्र रूप में और प्रतिशत के रूप में हुई वृद्धि से कुल बिक्रियों में घरेलू उद्योग के हिस्से में कमी आई है जो 1998 में लगभग 99 प्रतिशत से घटकर 66 प्रतिशत हो गई है।

(ख) उत्पादन क्षमता का उपयोग

याचिकाकर्ता का उत्पादन 1998 और 1999 के बीच ^{***} मी.टन से घटकर ^{***} मी.टन रह गया है और इसके परिणामस्वरूप घरेलू उद्योग के क्षमता उपयोग में पर्याप्त कमी आई है।

(ग) समग्र रूप में हुई बिक्रियाँ

बढ़े हुए आयातों के कारण, घरेलू उद्योग की बिक्रियाँ 1998 में ^{***} मी.टन से घटकर 1999 में ^{***} मी.टन रह गई है।

(घ) औसत बिक्री प्राप्ति और कीमतों में कटौती

प्राधिकारी पाते हैं कि वर्ष 1999 को समाप्त तीन वर्ष की अवधि के दौरान घरेलू उद्योग के लिए ईकाई बिक्री प्राप्ति लगभग स्थिर बनी रही और यह ईष्टतम उत्पादन लागत से काफी कम थी जिसके परिणामस्वरूप याचिकाकर्ता को पर्याप्त हानि हुई।

(ड.) कीमतों में कमी

प्राधिकारी पाते हैं कि 1999 में ई यू से कम कीमतों पर बड़ी मात्रा में हुए आयात के कारण भारतीय बाजार में कीमतों में कमी की स्थिति उत्पन्न हो गई है, जिससे घरेलू उद्योग अपने उत्पादन लागत के अनुरूप कीमतों पर बिक्री नहीं कर सका।

(च) लाभ/हानि

याचिकाकर्ता बहु-ईकाई संगठन का एक अंग है जो बहु-उत्पाद क्रियाकलापों में लगा हुआ है और विचाराधीन उत्पाद के बारे में कंपनी की वित्तीय स्थिति के संबंध में मुद्रित वार्षिक लेखों में कोई निष्कर्ष नहीं निकाला जा सकता। तथापि, प्राधिकारी ने सामान्यतः स्वीकृत लेखा सिद्धांतों के आधार पर खर्चों के आबंटन और विभाजन पर विचार करने के पश्चात विचाराधीन उत्पाद के याचिकाकर्ता को हुए लाभ पर विश्वास किया है। प्राधिकारी नोट करते हैं कि याचिकाकर्ता के औसत बिक्री प्राप्त उत्पादन लागत से कम है जिसके परिणामस्वरूप सोडियम फ़ैरोसाइनाइड के बिक्री से हानि हुई है।

(छ) क्षति के निष्कर्ष

प्राधिकारी इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि सभी संगत कारकों से, संचयी एवं सामूहिक रूप से, यह प्रमाणित होता है कि जांच अवधि के दौरान घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति हुई है।

(झ) कारणात्मक संबंध

14. यह निर्धारण करने के लिए कि क्या घरेलू उद्योग को हुई वास्तविक क्षति पाटित आयातों के कारण हुई थी, प्राधिकारी ने निम्नलिखित तथ्यों को ध्यान में रखा है:-

- (i) ई यू से इस उत्पाद के आयातों में समग्र रूप में और भारत में इस उत्पाद के उत्पादन और खपत की तुलना में पर्याप्त वृद्धि हुई है। कुल आयातों में ई यू के कुल हिस्से में भी बहुत वृद्धि हुई है। इसका प्रत्यक्ष परिणाम यह हुआ है कि घरेलू उद्योग ने अपना बाजार हिस्सा एक महत्वपूर्ण स्तर तक खो दिया है जिसके कारण इसकी बिक्री मात्र में कमी आई है।
- (ii) पाटित कीमतों पर ई यू से सोडियम फैंरोसाइनाइड के हुए पर्याप्त आयातों ने घरेलू उद्योग को अपनी बिक्री कीमतें अलाभकारी स्तर पर रखने के लिए बाध्य किया है जिसके परिणामस्वरूप भारतीय बाजार में कीमतों में गिरावट की स्थिति बनी है।
- (iii) ई यू से हुए आयातों से भारतीय बाजार में हुए इस उत्पाद की कीमतों में उस सीमा तक कमी आई है कि उसके कारण घरेलू उद्योग भारत में सोडियम फैंरोसाइनाइड की बिक्रियों से अपनी पूरी उत्पादन लागत वसूल नहीं कर सका और उचित लाभ अर्जित नहीं कर सका।
- (iv) निर्यातकों द्वारा ऊपर यह तर्क दिया गया है कि उनकी कीमतें घरेलू उद्योग की प्रचालित कीमतों के समान थी और उन्होंने उसमें कोई कटौती नहीं की थी और यह कि वर्ष 1997 तथा 1998 के दौरान ई यू से भारत को सोडियम फैंरोसाइनाइड का कोई निर्यात नहीं हुआ था। इसके अलावा इस अवधि के दौरान भी घरेलू उद्योग को हानि हुई थी और इसलिए ई यू से हुए निर्यात घरेलू उद्योग को हुई क्षति का कारण नहीं थे। यहां यह उल्लेख किया जा

सकता है कि वर्ष 1999 से पहले पाटनरोधी शुल्क लगे रहने के बावजूद चीन से पर्याप्त आयात हुआ था। वर्ष 1997 में चीन से 100 टन सोडियम फ़ैरोसाइनाइड का आयात हुआ था। इस लगातार पाटन के कारण, प्राधिकारी ने चीन के खिलाफ मध्य अवधि में की गई पाटनरोधी शुल्कों की समीक्षा के आधार पर दिनांक 11.7.2000 को निष्कर्ष जारी किए हैं जिनमें चीन जनवादी गणराज्य के मूल के या वहां से निर्यातित सोडियम फ़ैरोसानाइड के भारत में हो रहे सभी आयातों पर पाटनरोधी शुल्क को बढ़ाकर 615 पी एम टी अमरीकी डालर करने की सिफरिश की है। चीन से आयातों में जो कमी हुई है उससे अधिक ई यू से आयातों में वृद्धि हो गई है जिसके परिणामस्वरूप कीमतों में लगातार कमी रही है और घरेलू उद्योग को वित्तीय हानि हुई है। इसलिए, निर्यातक का यह विचार कि ई यू से हुए आयातों से घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति नहीं हुई है, सही नहीं है।

(अ) भारतीय उद्योग का हित

15. सामान्य तौर पर पाटनरोधी शुल्क लगाने का उद्देश्य यह है कि ऐसे पाटन को समाप्त किया जाए जिससे भारतीय उद्योग को नुकसान हो रहा है तथा भारतीय बाजार में ऐसी खुली और उचित प्रतिस्पर्धा की स्थिति पुनः बहाल की जाए जोकि देश के सामान्य हित में है।

16. प्राधिकारी यह मानते हैं कि पाटनरोधी शुल्क लगाने से सोडियम फ़ैरोसाइनाइड के उपयोग से विनिर्मित उत्पादों के कीमत स्तर प्रभावित होंगे और परिणामस्वरूप इन उत्पादों की सापेक्ष प्रतिस्पर्धात्मकता पर प्रभाव पड़ सकता है। किन्तु पाटनरोधी उपायों से भारतीय बाजार में उचित प्रतिस्पर्धा कम नहीं होगी। इसके विपरीत पाटन द्वारा प्राप्त होने वाले अनुचित लाभों को समाप्त किया जा सकेगा कि भारतीय उद्योग के ह्रास को रोका जा सकेगा और इस प्रकार सोडियम फ़ैरोसाइनाइड के उपभोक्ताओं के लिए व्यापक विकल्प उपलब्ध रहेंगे। प्राधिकारी नोट करते हैं कि पाटनरोधी उपायों को लागू किए जाने से ई यू से होने वाले आयात किसी भी रूप से प्रतिबंधित नहीं होंगे और इसलिए उपभोक्ताओं के लिए इस उत्पाद की उपलब्धता प्रभावित नहीं होगी। उपभोक्ता अब भी आपूर्ति के दो या इससे ज्यादा स्रोत भी रख सकते हैं।

17. पाटनरोधी शुल्क की राशि की सिफरिश करते समय प्राधिकारी ने याचिकाकर्ता को ई यू से हुए पाटन के अलावा अन्य कारकों से हो रही क्षति पर विचार नहीं किया है।

18. प्राधिकारी नोट करते हैं कि आयातक ने याचिकाकर्ता के साथ-साथ दूसरे उत्पादक को भी सोडियम फ़ैरोसाइनाइड की कीमतें कम करने के लिए बाध्य किया है जिससे निश्चित तौर पर भारतीय बाजार में प्रचालित कीमतों में गिरावट की स्थिति आई है और ई यू से हुए पाटन के परिणामस्वरूप घरेलू उद्योग की बिक्री मात्रा में भी गिरावट आई है ।

(ट) निष्कर्ष

19. प्राधिकारी उपरोक्त पर विचार करने के पश्चात इस निष्कर्ष पर पहुंचे हैं कि:

(i) ई यू मूल के सोडियम फ़ैरोसाइनाइड का भारत को निर्यात इसके सामान्य मूल्य से कम कीमत पर किया गया है:

(ii) घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति हुई है:

(iii) यह क्षति ई यू से हुए आयातों के कारण हुई है ।

20. प्राधिकारी इसे आवश्यक मानते हैं कि घरेलू उद्योग को होने वाली वास्तविक क्षति को दूर करने के लिए ई यू के मूल के सोडियम फ़ैरोसाइनाइड के सभी आयातों पर अंतिम निर्धारण होने तक अनन्तिम रूप से एक पाटनरोधी शुल्क लगाया जाए । प्राधिकारी द्वारा ज्ञात निर्यातकों के लिए निर्धारित किए गए पाटन मार्जिन को पैरा 11 में दर्शाया गया है ।

21. तदनुसार, प्राधिकारी यह सिफारिश करते हैं कि इस संबंध में अंतिम निर्धारण होने तक ई यू के मूल के सोडियम फ़ैरोसाइनाइड, जो सीमाशुल्क कोड 2837.20 के तहत आता है, के सभी आयातों पर केन्द्र सरकार द्वारा इस संबंध में जारी की जाने वाली अधिसूचना की तारीख से अनन्तिम पाटनरोधी शुल्क, जैसाकि नीचे निर्धारित किया गया है, लगाया जाए । पाटनरोधी शुल्क कालम 3 में उल्लिखित राशि तथा आयात की प्रति मी.टन पहुंच कीमत के बीच का अंतर होगा ।

क्षेत्र/देश	उत्पादक/निर्यातक का नाम	अमरीकी डालर प्रति मी.टन में राशि
यूरोपीय संघ (सभी सदस्य देश)	मै. डेगुसा हुल्स एवं अन्य सभी उत्पादक/निर्यातक	1535

22. इस उद्देश्य के लिए आयातों का पहुंच मूल्य सीमाशुल्क अधिनियम 1962 के अधीन सीमाशुल्क द्वारा निर्धारित निर्धारणीय मूल्य हागा जिसमें सीमाशुल्क अधिनियम 1975 की धारा 3,3क, 8ख,9 तथा 9क के तहत लगाए गए शुल्कों को छोड़कर सभी प्रकार के सीमाशुल्क शामिल होंगे ।

ठ. आगे की प्रक्रिया

23. प्रारंभिक निष्कर्षों को अधिसूचित करने के बाद निम्नलिखित प्रक्रिया का अनुसरण किया जाएगा:-

(क) प्राधिकारी सभी हितबद्ध पार्टियों से इन निष्कर्षों के बारे में टिप्पणियां आमंत्रित करते हैं और उन पर अंतिम निष्कर्ष निकालते समय विचार किया जाएगा:

(ख) प्राधिकारी द्वारा निर्यातकों, आयातकों, याचिकाकर्ताओं तथा अन्य हितबद्ध ज्ञात पार्टियों को अलग से पत्र लिखा जा रहा है, जो पत्र के प्रेषण की तारीख से 40 दिनों के अन्दर अपने विचार प्रस्तुत कर सकते हैं । कोई अन्य हितबद्ध पार्टी भी इन निष्कर्षों के प्रकाशन की तारीख से 40 दिनों के भीतर अपने विचारों से अवगत करा सकती है:

(ग) प्राधिकारी सभी हितबद्ध पार्टियों को मौखिक और उसके बाद लिखित उत्तर के लिए अवसर प्रदान करेंगे ।

(घ) प्राधिकारी यथोचित सीमा तक आगे जांच करेंगे ।

(ङ.) अंतिम निष्कर्षों की घोषणा करने से पहले प्राधिकारी आवश्यक तथ्यों को प्रकट करेंगे ।

एल. वी. सप्तऋषि, निर्दिष्ट प्राधिकारी

MINISTRY OF COMMERCE AND INDUSTRY
(Department of Commerce)
(Directorate General of Anti Dumping and Allied Duties)

NOTIFICATION

New Delhi, the 2nd January, 2001

PRELIMINARY FINDINGS

Subject : Anti-dumping investigation concerning imports of Sodium Ferrocyanide originating in or exported from the European Union—Preliminary findings

No. 23/1/2000-DGAD.—The Government of India having regard to the Customs Tariff Act, 1975 as amended in 1995 and the Customs Tariff (Identification, Assessment and Collection of Anti Dumping Duty on Dumped Articles and for Determination of Injury) Rules, 1995, thereof;

A. PROCEDURE

2. The procedure described below has been followed:-

- (i) The Designated Authority (hereinafter referred to as Authority), under the above Rules, received a written petition from M/s. Cyanides and Chemicals Company, Mumbai on behalf of the domestic industry, alleging dumping of Sodium Ferrocyanide originating in and exported from the European Union (hereinafter referred to as EU);
- (ii) The Authority notified the Delegation of European Commission in India about the receipt of dumping application made by the petitioner before proceeding to initiate the investigation in accordance with sub-rule (5) of Rule 5 supra;

- (iii) The Authority issued a Public Notice dated 13th June, 2000 published in the Gazette of India, Extraordinary, initiating anti dumping proceedings concerning imports of Sodium Ferrocyanide originating from EU classified under heading 2837.20 of Schedule I of the Customs Tariff Act, 1975;
- (iv) The Authority forwarded copy of the said public notice to the known exporters, importers, industry associations and to the complainant and gave them an opportunity to make their views known in writing.
- (v) According to sub-rule (3) of Rule 6 supra, the Authority provided a copy of the petition to all the known exporters and Delegation of European Commission in India.
- (vi) The Authority sent questionnaires, to elicit relevant information, to the following exporters:
1. M/s. Manox Pigment Business, Manchester, Great Britain
 2. M/s. Degussa-Huls AG, Frankfurt, Germany
 3. M/s. Degussa Huls Ltd., Cheshire SK, Great Britain
- (vii) The Delegation of European Commission in New Delhi was also informed about the initiation of investigation and was requested to advise the exporters/producers from their territory to respond to the questionnaire within the prescribed time;
- (viii) The questionnaire was sent to the following importers of Sodium Ferrocyanide:
1. M/s. Citurgia Bio-Chemicals, Mumbai
 2. M/s/ Seth Chemicals Works Pvt Ltd., Calcutta
 3. M/s. Shanti Labs, Bikaner
 4. M/s. Sona Inter-Chem, Vapi

5. M/s. Chemical Corporation, Mumbai

- (ix) Response to the questionnaire was filed by M/s. Sona Inter-Chem, Vapi, who have stated that they have not made any imports during the period of investigation. Among the exporters, M/s. Degussa Huls AG, Germany have filed response to the questionnaire. The information submitted by them was verified at their premises at Frankfurt, Germany and at works in Manchester UK.
- (x) Additional information regarding injury was sought from the petitioners, which was also furnished;
- (xi) The Authority kept available non-confidential version of the evidence presented by various interested parties in the form of a public file maintained by the Authority and kept open for inspection by the interested parties;
- (xii) ***** in this notification represents information furnished by the interested party on confidential basis and so considered by the Authority under the Rules;
- (xiii) The Authority sought and verified information given by the domestic industry and to this end investigations were carried out at the premises of the petitioner's head office at Mumbai and works at Surat;
- (xiv) The Authority also conducted cost investigation and worked out optimum cost of production and cost to make and sell Sodium Ferrocyanide in India on the basis of Generally Accepted Accounting Principles;
- (xv) The investigation covered the period from 1st January 1999 to 31st December 1999.

- (xvi) Copies of initiation notice was also sent to FICCI, CII, ASSOCHAM etc., for wider circulation.

B. PETITIONER'S VIEWS

3. The petitioner made the following major points:

- (i) The petitioner represents the domestic industry and Sodium Ferrocyanide being produced by the petitioner is a like product to the Sodium Ferrocyanide being imported from EU.
- (ii) EU is dumping Sodium Ferrocyanide in India and the petitioner has, therefore, approached the Designated Authority for considering levy of anti dumping duty.
- (iii) Sodium Cyanide is a basic raw material going into production of Sodium Ferrocyanide and considering the value of Sodium Cyanide alone, cost of even this single raw material is not being recovered by the exports from EU.
- (iv) Regarding the normal value, petitioners made efforts to get information on the domestic prices of sodium ferrocyanide in the EU. However, they could not get a reasonable and authentic evidence of the local prices charged by the manufacturers in the EU or for their exports to other countries. Therefore they constructed the normal value in EU on the basis of the details of cost of production for sodium cyanide which is the basic raw material and prices of utilities etc., on the basis of the industry norms. Sodium cyanide is a vital raw material for production of sodium ferrocyanide and constitutes major part of the total cost of production of sodium ferrocyanide.
- (v) The cif export price of sodium ferrocyanide from EU has been worked out on the basis of information available from secondary sources as Director General of Commercial Intelligence and Statistics, Calcutta, which is the official

agency for compiling such data in India has not given the information for the year 1999 at the time the petition was filed. Assessable value of imports per unit in US\$ comes to 936.11 PMT. The export prices need to be adjusted for the various expenses such as landing charges @ 1%, ocean freight, marine insurance, commission, inland transportation in the country of export, port handling and port charges for arriving at the net export price which is to be compared with the normal value for arriving at the dumping margin. On the basis of the calculations made by the domestic industry dumping margin as percentage of net export price is more than 100%.

- (vi) The imports of Sodium Ferrocyanide from EU have increased steeply from nil in 1998 to 200 MT in 1999.
- (vii) The total imports during the year 1999 into India of Sodium Ferrocyanide were 298 MT.
- (viii) The exports of Sodium Ferrocyanide from EU to India have led to substantial decline in the sales of domestic industry in 1999 as compared with 1998 and hence a fall in domestic production and capacity utilisation.
- (ix) A situation of price undercutting and sales decline prevailed in the Indian market in view of dumping from EU.
- (x) Indian industry has suffered material and real injury directly caused by the dumped imports.

C. IMPORTERS AND EXPORTERS' VIEWS

4. M/s. Sona InterChem Pvt Ltd., Vapi, one of the importers in reply to the notification have stated that they have not imported any quantity of the product during

the last four years and hence they are not submitting any information on the questionnaire.

5. M/s. Degussa Huls, AG, exporter from the EU made a request for extension of time for filing the reply to the questionnaire addressed to them till 11.8.2000 which was accepted by the Designated Authority and the reply was filed by them through their legal representatives on 11.8.2000. Subsequently further submissions were made by them vide their letters of 14th and 18th September 2000 clarifying certain issues submitted in their earlier submissions. The information submitted by them was verified by the Designated Authority at their premises in Frankfurt, Germany and at their works in Manchester, UK. The points made by the exporters in their submissions are briefly stated as follows:-

- (i) All the quantities exported to India during the period of investigation i.e., Jan-December 1999 have been to only one customer. Even though the individual shipments are of smaller quantities they are against one single order for a total supply of *** MTS per year shipped as per the delivery instructions of the customer in India.
- (ii) As compared to the above supply to India they had supplied the said product to a number of customers in EU and only very few of these customers had ordered and were supplied quantities in excess of *** MTS. Requirements of other customers were relatively small as compared with the quantities ordered by the Indian customer in the above said order. In terms of para 6(i) of Annexure I of the Anti Dumping Rules a fair comparison shall be made between the export price and the normal value and the comparison shall be at the same level of trade and in respect of sales made at as nearly as possible the same time. Due allowances are required to be made for differences which affect price comparability. One factor which has specifically been mentioned is difference in quantities. It is therefore submitted that

the normal value corresponding to the exports to India should be weighted average price to those customers in the EU who were supplied quantities in excess of *** MTS.

- (iii) As per the submissions made by the petitioners, the normal value of sodium ferrocyanide in the EU has been constructed by taking the normal value of sodium cyanide, which is the major raw material, as determined by the Authority in an earlier anti dumping investigation on sodium cyanide from the EU. Sodium cyanide is produced and sold by one division of Degussa Huls in Germany whereas sodium ferrocyanide is manufactured in another division in Manchester, UK. This division does not buy sodium cyanide from within the Group whereas the petitioners have assumed to be so. This is prima facie fallacy in their case. Division manufacturing sodium ferrocyanide which is in UK sources sodium cyanide solution at a price of US\$ *** per MT and on the basis of the usage of sodium cyanide for manufacture of one MT of sodium ferrocyanide the actual cost of sodium cyanide used in the manufacture of sodium ferrocyanide is only US\$ *** per MT as against US\$ *** per MT claimed by the petitioner. The cost of sodium cyanide has been inflated by the petitioner by more than 50%. The required evidence regarding this has been enclosed in the confidential version.
- (iv) The above mentioned single factor is enough to convince the Authority that their cost of production is correct and the petitioner has justified the dumping only as a result of inflating the constructed cost of sodium ferrocyanide and the authority is therefore requested to discard the information given in the petition and to determine the dumping if any based on the information contained in the questionnaire response.

- (v) The alleged material injury from the decline in profitability is not due to EU as exports of sodium ferrocyanide started only in 1999 whereas the domestic industry was suffering losses even in 1997 and 1998. The prices of M/s Degussa Huls did not affect the prices of domestic industry and in fact they ensured that their prices were at the same level as that of the domestic industry. Further if at these prices the domestic producer was not able to meet its cost and make a profit, blame cannot be put on Degussa Huls. Thus the inability of petitioner to cover its cost is due to historical factors and not caused by export from EU.

D. EXAMINATION AND FINDINGS BY AUTHORITY

4. The submissions made by the exporters, importers, petitioner and other interested parties have been examined and considered while arriving at these findings and wherever appropriate have been dealt hereinafter.

E. LIKE ARTICLE AND PRODUCT UNDER CONSIDERATION

5. Sodium Ferrocyanide is an Inorganic chemical and is manufactured out of Sodium Cyanide, having application for production of fencycine, pigments, photographic fixing agents in electroplating industry, for fermentation processes of fruits acids and pharmaceutical/chemical industry etc. Sodium Ferrocyanide is classified under custom code 2837.20 of Schedule I of the Customs Tariff Act, 1975.

6. Sodium Ferrocyanide being imported from EU has characteristics closely resembling to the Sodium Ferrocyanide being produced by the domestic industry and, therefore, the two are considered as like article in accordance with Rule 2(d) supra. The product, Sodium Ferrocyanide is, therefore, covered under the scope of this investigation.

F. DOMESTIC INDUSTRY

7. The petition has been filed by M/s. Cyanides and Chemicals Co., (a unit of Hindustan Development Corporation) 65 Free Press House, Nariman Point, Mumbai.

M/s. Gujarat Alkalies and Chemicals Ltd., is also producing Sodium Ferrocyanide. Production of the petitioners, however, accounted for more than 80% of the total Indian production and, therefore, the petitioner constitutes domestic industry in accordance with Rule 2(b) *supra*.

G. DUMPING

Normal value

8. The domestic industry in their submissions have requested use of constructed normal value in the absence of information regarding the evidence of the domestic sale prices of the manufacturers of EU. However, in view of the response given by M/s. Degussa Huls, one of the manufacturers in the EU, sufficient information has been furnished regarding the domestic prices. The Authority intends to use the information provided by the exporters on the domestic sale price in the EU for arriving at normal value.

9. The Authority accepts the argument given by the exporter that the calculation of normal value shall be based on the sale price to those customers in EU who have supplied quantities in excess of *** MTS as the order against which supplies have been made to the customer in India was also for a total supply of *** MTS. However, while using this information the Authority has decided to ignore the transactions of domestic sales which are below cost of production as not being in the ordinary course of trade by reason of prices, in terms of para 2 of Annexure I of Anti Dumping Rules. The Authority observes that in the case of some customers, supplies have been made at prices below the cost of production per unit. These supplies have been made in substantial quantities throughout the year and hence do not provide for the recovery of all costs within a reasonable period of time. Normal value has been determined in accordance with section 9A(I)© of the Customs Tariff Act. An

adjustment of ***% has been claimed as discount/commission by the exporters in the export price which has been accepted and allowed after verification.

Export Price

10. The petitioner had furnished information regarding the export price on the basis of the secondary evidence and claimed adjustments on account of landing charges, ocean freight, marine insurance, commission etc. However in their submissions the exporters have given complete information regarding export price from India and furnished invoices and other documents in support of their claim for export price and adjustments on account of landing charges, ocean freight, marine insurance, commission etc. The information furnished by the exporters has been verified and accepted.

Dumping Margin

11. The principles governing the determination of normal value, export price and the dumping margin as laid down in the Custom Tariff Act and the Anti Dumping Rules are elaborated in Annexure I to the Rules. For the purpose of fair comparison between the normal value and export price, the Authority has made calculations on the basis of parameters mentioned in paragraphs above. Based on the fair comparison of the normal value and export price so worked out, the margin of dumping in respect of exports made by Degussa Huls comes out to be 60% of the export price. The Authority intends to use the same dumping margin for all the exports from EU as there does not seem to be any other manufacturer-exporter from the EU of the product.

H INJURY

12. Under Rule 11 supra, annexure II, when a finding of injury is arrived at, such finding shall involve determination of the injury to the domestic industry, ".....taking into account all relevant facts, including the volume of dumped imports, their effect on

dumped imports on prices, it is considered necessary to examine whether there has been a significant price undercutting by the dumped imports as compared with the price of the like product in India, or whether the effect of such imports is otherwise to depress prices to a significant degree or prevent price increases, which otherwise would have occurred, to a significant degree. Also the effect of dumped imports on the volume of sales by the domestic industry needs to be looked into to determine injury being caused.

13. For the examination of the impact on the domestic industry in India, the Authority considered such further indices having a bearing on the state of industry as production, capacity utilization, sales, stock, profitability, net sales realisation etc.

(a) Volume and market share of dumped imports

Imports of Sodium Ferrocyanide from EU were nil till 1998 which have increased to 200 MTS in 1999 which signifies a very sharp increase in the imports in the total market size of approximately 900 MTS. The market share of imports from the territories of EU in Sodium Ferrocyanide in India has also thus increased from nil to approximately 30% of the total domestic demand in 1999. The increase in absolute terms as well as percentage terms of imports of Sodium Ferrocyanide from EU is matched by fall in the share of domestic industry in the total sales from approximately 99% in 1998 to 66% in 1999.

(b) Production capacity utilisation

There has been a fall in production of the petitioner from *** MTS to *** MTS between 1998 and 1999 and as a result there has been a significant fall in the capacity utilisation of the domestic industry as well.

(c) Sales in absolute terms

Because of the increased imports, the sales of the domestic industry has fallen from *** MTS in 1998 to *** MTS in 1999.

(d) Average sales realisation and price under cutting

The Authority finds that the unit sales realisation for the domestic industry during three year period ending 1999 has almost remained constant and much lower than the optimum cost of production resulting in significant losses to the petitioner.

(e) Price Suppression

The Authority finds that import of large quantities from EU in 1999 at low prices resulted in a situation of price suppression in the Indian market, which prevented the domestic industry to sell at prices commensurate with its cost of production.

(f) Profit/Loss

The petitioner is a part of multi-unit organisation engaged in multi product activities and no conclusion can be drawn from the printed annual accounts about the financial position of the company for the product under consideration. The Authority has, however, relied upon the profitability of the petitioner from the product under consideration after considering allocation and apportionment of expenses on the basis of Generally Accepted Accounting Principles. The Authority noted that the average sales realisation to the petitioner is less than the cost of production resulting in losses from the sale of Sodium Ferrocyanide.

(g) Conclusion of the injury

The Authority is led to the conclusion that all the relevant factors, cumulatively and collectively establish that the domestic industry has suffered material injury during the period of investigation.

I. CAUSAL LINK

14. In determining whether material injury to the domestic industry was caused by the dumped imports, the Authority took into account the following facts:

- (i) the imports of the product from EU increased significantly in absolute terms and relative to the production and consumption of the product in India. The share of EU in the total imports also increased significantly. As a direct consequence, the domestic industry lost its market share to a significant level resulting in fall in its sales volume.
- (ii) The substantial imports of Sodium Ferrocyanide from EU at dumped prices forced the domestic industry to keep its selling prices at unremunerative level which resulted in a situation of price undercutting in the Indian market.
- (iii) The imports from EU suppressed the prices of the product in the Indian market to such an extent that the domestic industry was prevented from recovering its full cost of production and earn a reasonable profit from the sales of Sodium Ferrocyanide in India.
- (iv) It has been argued above by the exporters that they matched the prevailing price of the domestic industry and did not undercut and that there was no export of Sodium Ferrocyanide to India from EU during the years 1997 and 1998. Further the domestic industry was making losses even during this period and hence the export from EU were not the cause of injury to the domestic industry. Here it may be mentioned

that prior to 1999 there had been substantial imports from China despite the anti dumping duty being there in place. In 1997, 100 tonnes of Sodium Ferrocyanide was imported from China. On account of this continued dumping, the Designated Authority in the mid-term review of anti dumping duties against China, issued a finding on 11.7.2000 recommending enhanced anti dumping duty to US\$ 615 PMT on all imports of Sodium Ferrocyanide into India originating in or exported from the People Republic of China. The fall in imports from China has been more than matched by increased imports from EU resulting in continued price suppression and financial losses for the domestic industry. Hence the contention of the exporter that imports from EU have not caused material injury to the domestic industry is not correct.

J. INDIAN INDUSTRY'S INTEREST

15. The purpose of anti dumping duties in general is to eliminate dumping which is causing injury to the domestic industry and to re-establish a situation of open and fair competition in the Indian market which is in the general interest of the country

16. The Authority recognised that the imposition of anti dumping duties might affect the price levels of the products manufactured using Sodium Ferrocyanide and consequently might have some influence on relative competitiveness of these products. However, fair competition on the Indian market will not be reduced by the anti dumping measures. On the contrary, imposition of anti dumping measures would remove the unfair advantages gained by dumping practices, would prevent the decline of the domestic industry and help maintain availability of wider choice to the consumers of Sodium Ferrocyanide. The Authority notes that the imposition of anti dumping measures would not restrict imports from EU in any way, and therefore, would not affect the availability of the product to the consumers. The consumers could still maintain two or even more sources of supply.

17. Injury being caused to the petitioner from factors other than dumping from EU have not been considered by the Authority while recommending the amount of anti dumping duty.

18. The Authority notes that the petitioner as well as the other producer have been forced by the importer to reduce the prices of Sodium Ferrocyanide which clearly establish a situation of price undercutting prevailing in the Indian market and also there is fall in sales volume of domestic industry as a result of dumping from EU.

K. CONCLUSIONS

19. The Authority has, after considering the foregoing, come to the conclusion that:

- (i) Sodium Ferrocyanide of EU origin has been exported to India below its normal value;
- (ii) the Indian industry has suffered material injury;
- (iii) the injury has been caused by the imports from EU.

20. The Authority considers it necessary to impose an anti dumping duty provisionally, pending final determination, on all imports of Sodium Ferrocyanide originating from EU in order to remove the material injury to the domestic industry. The margin of dumping for known exporter determined by the Authority are indicated in para 11.

21. Accordingly, the Authority recommends that provisional anti dumping duties as set out below be imposed from the date of notification to be issued in this regard by the Central Government on all imports of Sodium Ferrocyanide falling under customs code 2837 20 originating from EU pending final determination. The anti dumping

duty shall be the difference between the amount mentioned in column 3 and landed price of import per MT.

<i>Territory/Country</i>	<i>Name of Producer/Exporter</i>	<i>Amount in US\$ per MT</i>
European Union (all member-countries)	M/s. Degussa Huls and all other producers/exporters	1535

22. Landed value of imports for the purpose shall be the assessable value as determined by the Customs under the Customs Act, 1962 and all duties of customs except duties under section 3, 3A, 8B, 9 and 9A of the Customs Tariff Act, 1975.

L. FURTHER PROCEDURE

23 The following procedure would be followed subsequent to notifying the preliminary findings:-

- (a) The Authority invites comments on these findings from all interested parties and the same would be considered in the final findings;
- (b) Exporters, importers, petitioner and other interested parties known to be concerned are being addressed separately by the Authority, who may make known their views, within forty days from the date of despatch of the letter. Any other interested party may also make known its views within forty days from the date of publication of these findings;
- (c) The authority would provide opportunity to all the interested parties for oral submissions to be rendered thereafter in writing;

- (d) The Authority would conduct further verification to the extent deemed necessary,
- (e) The Authority would disclose essential facts before announcing final findings.

L.V. SAPTHARISHI, Designated Authority